पूर्वा

सितम्बर - 2024
मूल्य : ₹ 50

वर्ष : 16, अंक 12
सितंबर, 2024

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
shailey1961@gmail.com
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

प्रति : रु. 50.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित : रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित : रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय।

स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

संपादक पूर्णतः अवैतनिक

संपादक
शैलेय

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द संयोजन
उषा ठाकुर

अनुक्रमणिका

संपादकीय/शैलेय — बारिशों बीच हम — 3

मतभेद

राहुल के सामने चुनौतियां : मदन कश्यप 5

खंड-1 : साक्षात्कार

(कात्यायनी से प्रभाकरन हेब्बार इल्लत की बातचीत)

पितृसत्तात्मकता से मुक्ति... : कात्यायनी 6

खंड-2 : कहानियां/देशांतर कहानी

डैथ लाइव	:	एस.आर. हरनोट	13
यात्री	:	ज्ञानप्रकाश विवेक	23
हू केयर्स	:	रजनी गुप्त	31
वापसी	:	सुशांत सुप्रिय	38
काली टाई वाली औरत	:	जयंती रंगनाथन	41
नायिका	:	सरिता निर्झरा	48

खंड-3 : कविताएं/अनुदित कविताएं

राजकुमार कुंभज की कविताएं	52
चंद्रेश्वर की चार कविताएं	54
राजेश सकलानी की सात कविताएं	56
हरे प्रकाश उपाध्याय की दो कविताएं	58
मानस रंजन महापात्र की तीन कविताएं	60
विपिन नायक की पांच कविताएं	62
शैलबाला महापात्र की तीन कविताएं	64

खंड-4 : स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

आरा से आरा तक... : कृष्ण कल्पित 66

मुख़ातिब

(राजेंद्र कुमार से दिनेश कर्नाटक का सवाल)

'साहित्य समाज का दर्पण है'...: राजेंद्र कुमार 69

देख कबीरा रोया

बाल बुद्धि बनाम बैल बुद्धि : मुकेश कुमार 71

प्रति-संसार

दुनिया का कोई भी साहित्य... : अर्पण कुमार 72

कथा-मीमांसा

कमलेश्वर का ठिकाना बना... : पंकज शर्मा 75

खंड-5 : मूल्यांकन

भारत की व्याख्या...	:	कांता राय	78
एक किताब में फूल को...	:	आशीष दशोत्तर	81
विस्मृत से स्मृति की ओर यात्रा:		कमरूजमा अंसारी	83
राहुल के सहारे मोदी राज...	:	अमरीक सिंह	88
हर रात की कोख में एक...	:	सुलोचना दास	90

खबरनामा

साहित्यकार का लक्ष्य केवल... : उषा ठाकुर 94

आवरण परिकल्पना : जनार्दन कुमार सिंह
रेखा चित्र : आस्था

बारिशों बीच हम

दर्जनों नदियों को जन्म देने वाला हिमालय एशिया में आसवित (शुद्ध) जल का एक 'बफर स्टॉक' है। चूंकि यह चीज हमें प्रकृति के रूप में सहज-सुलभ है, इसलिए हमें इसकी कीमत समझ में नहीं आती। भारतीय समुद्रों और भारतीय हिमालय को जोड़ने वाला एक जीवनदाई सेतु मानसून है।

हम इस वक्त चौमास के मध्य में हैं। यह एक कुमाऊंनी मुहावरे के अनुसार 'सतझड़ लगने' (सात दिनों की लगातार बारिश) का समय है। जाहिर है हमसे एक पीढ़ी पहले जरूर लंबी बारिशें होती रही होंगी वरना यह मुहावरा ही क्यों बनता? कोई पचास-चालीस साल पहले तक पहाड़ों से मैदानों और गांवों से शहरों की ओर इस तरह पलायन नहीं हुआ था। परिवार छोटे थे। गांवों की छोटी-छोटी खेतियां भी उन्हें पालने में सक्षम थीं। शहर बेशक शहर थे, लेकिन आज की सुरसा की तरह मुंह फैलाए और गांवा खेतों को लील जाने को आतुर नहीं दिखते थे। सड़कें बेशक कम चौड़ी थीं, लेकिन उन पर निजी कारों-बाइकों की आज की जितनी भयानक रेलमपेल नहीं थी। बारिशों के साथ पहाड़-मैदान में भूस्खलन और प्लावन तब भी होते आते थे, लेकिन बारिशों को हमारे देश में नियमित और अनिवार्य संकट की तरह कभी नहीं माना गया है।

पहले स्कूली बच्चे बारिशों में बस्तों को किसी तरह जतन से छिपाए दौड़ते-भागते स्कूल पहुंच जाते या तेज बारिश में बस्ते स्कूल में ही छोड़कर घर लौट लेते थे। मजदूर-किसान बरसाती फुहारों बीच खेतों में काम करते रहते थे। अब भी करते हैं। धान रोपाई चातुर्मास का कृषि कर्म है। यह वृहत उत्तर भारत और तटीय प्रदेशों में बारिशों में ही किया जाता है। लेकिन पहले बारिश आते ही इतनी हायतौबा, असुरआबोध और हड़बोंग पैदा नहीं होती थी जितनी अब। आखिर एक मानसूनी देश में चातुर्मास में आसमान से पानी नहीं तो क्या आग बरसनी चाहिए? बेशक पहाड़ों में पहाड़ धंसते हैं, खिसकते हैं, सड़कें टूटती हैं, मैदानों में जल-प्लावन होते हैं और किनारे की बस्तियां उनकी चपेट में आ जाती हैं। गांवों में कीचड़-कांदो के कारण राह चलना कठिन हो जाता है। कच्चे घर टपकते और टूटते हैं, लेकिन तपाने-सुखाने वाली गर्मी के बाद लोगों को बारिशों का इंतजार भी तो रहता है।

मानसूनी बारिश के बिना इस देश में अभी जन-जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। कृषि, वनोपज, बागवानी, पशुचारण और वन्य जीवन, आप चाहें तो इसमें पनबिजली को भी जोड़ सकते हैं। बारिश के अभाव में हद से हद एक या दो साल भूमिगत जल से काम चलाया जा सकता है। लेकिन भूमिगत जल और नदी जल का मुख्य स्रोत तो बारिश ही है। हिमालय पर नई बर्फबारी न हो तो वह कब का सूख जाए। बारिश की जो बूंदें मिट्टी में जज्ब हो जाती हैं, उनकी नमी का कुछ हिस्सा वनस्पतियों के चेहरों पर चमक लाता है। फलों में रस बनकर उतरता है, कुछ ताप के कारण वाष्पित होता है और शेष मृदा-कणों से होता हुआ धरती की गहराई में चला जाता है। यह जल हमें कुओं, चापांकलों, गदेरों और नदियों-झीलों में संग्रहीत रूप से मिलता है। दरअसल कोई नदी सिर्फ रूपाकार में नदी नहीं होती। वह एक जलप्रवाह प्रणाली होती है। दाएं-बाएं की चट्टानों का पानी भूमिगत चट्टानों की बनावट के अनुसार भूमि की सतह से ऊपर और नीचे जाकर नदी में मिलता है। तभी कोई नदी सदानीरा रह पाती है। गंगा गोमुख में जो है हरिद्वार और गंगासागर में ठीक वही नहीं है। कल्पना कीजिए सिर्फ दो वर्ष पानी न बरसे तो नदियों का क्या हाल हो जाएगा?

दर्जनों नदियों को जन्म देने वाला हिमालय एशिया में आसवित (शुद्ध) जल का एक 'बफर स्टॉक' है। चूंकि यह चीज हमें प्रकृति के रूप में सहज-सुलभ है, इसलिए हमें इसकी कीमत समझ में नहीं आती। भारतीय समुद्रों और भारतीय हिमालय को जोड़ने वाला एक जीवनदाई सेतु मानसून है। फिर वे नदियां हैं जो हिमवान की गोद से निकलती और समुद्र में गिरती हैं। यह एक स्वाभाविक जलचक्र है। क्या हम पृथ्वी के निर्माण का इतिहास भूल गए हैं कि लगातार दस लाख वर्ष की बारिश के बाद इस पर सागरों का निर्माण हुआ था। सागर तटों पर ही पहला एक-कोशीय जीव अमीबा अस्तित्व में आया था। फिर बारिश से घबराहट क्यों?

दरअसल हमने अपने सभी तंत्र इस ढंग से विकसित किए हैं कि ऋतुओं क सहज-स्वाभाविक चक्र भी हमें असुरक्षाबोध से भर देता है। हमारी सरकारें, हमारे डॉक्टर और सलाहकार हमें बताते रहते हैं कि बारिश के अलावा जाड़ा-गर्मी भी खौफनाक चीजें हैं। ऋतुओं के परिवर्तन के विज्ञान, उनसे मिलती प्राकृतिक सहूलियतों और उनकी उग्रता के बारे में जनता को सचेत, संतुलित ढंग से शिक्षित करना अलग बात